

इकाई 4 शिक्षा में बदलाव

संरचना

- 3.1 प्रस्तावना
- 3.2 उद्देश्य
- 3.3 महात्मा गांधी का योगदान
- 3.4 ज्योतिबा फुले का योगदान
- 3.5 दादाभाई नौरोजी का योगदान
- 3.6 गोपाल कृष्ण गोखले का योगदान
- 3.7 सर्व शिक्षा अभियान
- 3.8 राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान
- 3.9 सारांश
- 3.10 प्रगति की जांच
- 3.11 सन्दर्भ सूची

3.1 प्रस्तावना

प्राचीन भारत से आधुनिक भारत में शिक्षा प्रणाली नित परिवर्तनशील रही है. भारतीय समाज के विकास और उसमें होने वाले परिवर्तनों की रूपरेखा में शिक्षा की जगह और उसकी भूमिका को भी निरंतर विकासशील पाते हैं। भारत की प्राचीन शिक्षा आध्यात्मिकता पर आधारित थी। शिक्षा, मुक्ति एवं आत्मबोध के साधन के रूप में थी छात्र और शिक्षकों को आपसी संबंध प्रेम और सम्मान का था। सादगी, सदाचार, विद्याप्रेम और धर्माचरण पर जोर दिया जाता था। कंठस्थ करने की परंपरा थी। भारत में आधुनिक शिक्षा की नींव यूरोपीय ईसाई धर्मप्रचारक तथा व्यापारियों के हाथों से डाली गई। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी ही रही। मातृभाषा की उपेक्षा होती गई। शिक्षा संस्थाओं और शिक्षितों की संख्या बढ़ी, परंतु शिक्षा का स्तर गिरता गया। देश की उन्नति चाहनेवाले भारतीयों में व्यापक और स्वतंत्र राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता का बोध होने लगा। स्वतंत्रताप्रेमी भारतीयों और भारतप्रेमियों ने सुधार का काम उठा लिया। **1911** में गोपाल कृष्ण गोखले ने प्राथमिक शिक्षा को निरुशुल्क और अनिवार्य करने का प्रयास किया। उनका मानना था कि वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा भारत की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इसीलिए इन्होंने सबसे पहले प्राथमिक शिक्षा लागू करने के लिये सदन में विधेयक भी प्रस्तुत किया था। **1913** में भारत सरकार ने शिक्षानीति में अनेक परिवर्तनों की कल्पना की। परंतु प्रथम विश्वयुद्ध के कारण कुछ हो न पाया। प्रथम महायुद्ध के समाप्त होने पर कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग नियुक्त हुआ बाद में गांधी ने गोखले से मिले अनुभवों और अपनी समझ को शामिल करते हुए “ नई तालीम ” के

माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने और आस-पास के परिवेश में जीने का कौशल विकसित करने में सक्षम शिक्षा देने की बात कही। सात से **11** वर्ष के बालक बालिकाओं की शिक्षा अनिवार्य हो। शिक्षा मातृभाषा में हो। हिंदुस्तानी पढ़ाई जाए। चरखा, करघा, कृषि, लकड़ी का काम शिक्षा का केंद्र हो जिसकी बुनियाद पर साहित्य, भूगोल, इतिहास, गणित की पढ़ाई हो। गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित बुनियादी शिक्षा का महत्वपूर्ण लक्ष्य, शिल्प आधारित शिक्षा द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास कर उसे आत्मनिर्भर आदर्श नागरिक बनाना था। ज्योतिबा फुले ने महाराष्ट्र को एक नये ढंग का नेतृत्व दिया। ज्योतिबाफुले ने महाराष्ट्र की नारी तथा शूद्रों दोनों को सामाजिक गुलामी से मुक्त कराने की प्रतिज्ञा की 1848 में ज्योतिबा ने महिलाओं और अछूतों के लिए पूणा में एक विद्यालय खोला। देश में इस प्रकार का यह पहला विद्यालय था। स्त्रियों और दलितों के लिए शिक्षा व्यवस्था ज्योतिबा फुले व सावित्रीबाई फुले के अथक प्रयासों का परिणाम है। दादा भाई नौरोजी ने भी समाज सेवा हेतु कई कार्य किये, जिनमें निःशुल्क पाठशालाओं आदि की व्यवस्था थी। उन्होंने शिक्षा के विकास, सामाजिक उत्थान और परोपकार के लिए बहुत-सी संस्थाओं को प्रोत्साहित करने में योगदान दिया, वर्तमान लोकतंत्र में सभी नागरिकों के लिए शिक्षा मुहैया कराना सरकार का मुख्य कर्तव्य है। शिक्षा के स्तर में बेहतरी के लिए नित नए प्रयास लिए जा रहे हैं। सर्व शिक्षा अभियान व राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान इसी दिशा में एक कदम हैं जिससे सभी के लिए स्तरीय शिक्षा को सुनिश्चित किया जा सके।

3.2 उद्देश्य - इस इकाई के अध्येयन के पश्चात विद्यार्थी

- शिक्षा में उत्तरोत्तर विकास से अवगत हो सकेंगे
- गोपाल कृष्ण गोखले की शिक्षा में भूमिका को स्पष्ट कर सकेंगे
- महात्मा गांधी के शिक्षा में योगदान से परिचित हो सकेंगे.
- बुनियादी शिक्षा और नयी तालीम के महत्त्व को जान सकेंगे
- स्त्री व दलित शिक्षा के लिए किये गए ज्योतिबा फुले के अथक प्रयासों से परिचित हो सकेंगे.
- दादा भाई नौरोजी की शिक्षा में भूमिका को समझ सकेंगे
- सर्व शिक्षा अभियान व राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के कार्यों व उद्देश्यों को समझ सकेंगे, भूमिका निर्दिष्ट कर सकेंगे.

3.3 महात्मा गांधी का योगदान

महात्मा गांधी भारत की स्वदेशी परम्पराओं व सांस्कृतिक मूल्यों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण-पद्धति की निरंतर हिमायत करते रहे। अंग्रेजी शिक्षा के जनविरोधी चरित्र को लेकर गहरी पीड़ा लेकर महात्मा गाँधी हमारे सामने प्रकट हुए हिन्द स्वराज जैसी पुस्तक के

लेखक रूप में। 1909 में छपी इस पुस्तक में गाँधी जी ने जहाँ यूरोप की मशीनी सभ्यता की कठोर आलोचना की वही उन्होंने भारत में अँग्रेजों द्वारा थोपी गई शिक्षा पद्धति का तीव्र प्रतिवाद किया। अँग्रेजी शिक्षा पद्धति से क्षुब्ध असंतुष्ट गाँधी ने दो टूक शब्दों में यह कहने का साहस किया। करोड़ों लोगों को अँग्रेजी शिक्षण देना उन्हें गुलामी में डालने जैसा है। मैकाले ने जिस शिक्षण की नींव डाली वह सचमुच गुलामी की नींव थी। उसने इसी इरादे से वह योजना बनाई यह मैं नहीं कहना चाहता। किन्तु उसके कार्य का परिणाम यही हुआ है। हम स्वराज्य की बात भी पराई भाषा में करते हैं यह कैसी बड़ी दरिद्रता है। अँग्रेजी शिक्षण स्वीकार करके हमने जनता को गुलाम बनाया है। अँग्रेजी शिक्षण से दम्भ, द्वेष, अत्याचार आदि बढ़े हैं। अँग्रेजी शिक्षा प्राप्त लोगों ने जनता को ठगने और परेशान करने में कोई कसर नहीं रखी। भारत को गुलाम बनाने वाले तो हम अँग्रेजी जानने वाले लोग ही हैं।^{११}

गाँधी जी मानते थे कि आत्मा की शिक्षा पवित्र ग्रंथों से नहीं मिलती बल्कि यह तो जीवन और आचरण से आती है। गाँधी जी मानते थे कि घर के अन्तरंग सम्बन्ध ही सारी नैतिक एवं सामाजिक शिक्षा की नींव हैं। इसे वह केन्द्रीय महत्त्व देते थे। उन्होंने लिखा मैंने हमेशा ही हृदय की संस्कृति और चरित्र निर्माण को पहले स्थान पर रखा है। बाद में जब उन्होंने उन दिनों का पुनरवलोकन किया तो उन्हें लगा कि उनके बच्चे घर में पढ़ते हुए सादगी और सेवा का अर्थ सीख चुके थे क्योंकि यह घर ऐसा था जहाँ इन बातों की खोज हो रही थी और उनको अमल में लाया जा रहा था। गाँधीजी ने अपनी शिक्षा योजना में सबसे पहले माध्यम के सवाल को महत्वपूर्ण मानते हुए इस बात पर बल दिया कि भारत के विभिन्न प्रांतों में शिक्षा देने का काम प्रांतीय भाषाओं में यानी वहाँ की मातृभाषाओं में किया जाना चाहिए। अँग्रेजी भाषा के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा के बरक्स मातृभाषा के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा ही उन्हें अत्यधिक सहज-स्वाभाविक लगी। प्रमाण स्वरूप इंडियन ओपिनियन^{१२} पत्रिका के 19.8.1910 के अंक में गाँधी जी के छपे लेख शिक्षा का माध्यम क्या हो^{१३} का यह कथन प्रस्तुत है वृ हम लोगों में बच्चों को अँग्रेज बनाने की प्रवृत्ति पाई जाती है। मानो उन्हें शिक्षित करने का और साम्राज्य की सच्ची सेवा के योग्य बनाने का वही सबसे उत्तम तरीका है। हमारा ख्याल है कि समझदार से समझदार अँग्रेज भी यह नहीं चाहेगा कि हम अपनी राष्ट्रीय विशेषता अर्थात् परम्परागत प्राप्त शिक्षा और संस्कृति को छोड़ दें अथवा यह कि हम उनकी नकल किया करें। इसलिए जो अपनी मातृभाषा के प्रति चाहे वह कितनी ही साधारण क्यों न हो इतने लापरवाह हैं वे एक विश्वव्यापी धार्मिक सिद्धान्त को भूल जाने का खतरा मोल ले रहे हैं।^{१४}

वे वैकल्पिक विषयों के रूप में उच्च शिक्षा के स्तर पर विदेशी भाषाओं को जानने-पढ़ने के विरुद्ध नहीं रहें लेकिन प्रारम्भिक अवस्था में बच्चों को मातृभाषा द्वारा शिक्षा दी जाए इसके पक्ष में वे मजबूती से खड़े रहे। इसके अतिरिक्त उन्होंने शिक्षा में अक्षर ज्ञान को महत्वपूर्ण मानते हुए भी उससे अधिक महत्व दिया शारीरिक श्रम की प्रतिष्ठा को। स्पष्टतः गाँधी जी शिक्षा का उद्देश्य केवल बुद्धि या मस्तिष्क के विकास तक सीमित नहीं मानते थे बल्कि उसे एक सम्पूर्ण साधना-पद्धति के रूप में चलाना चाहते थे जो मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, आर्थिक विकास के साथ-साथ उसके आध्यात्मिक उत्कर्ष में भी सहायक हो। उनकी दृष्टि में शरीर के साथ-साथ आत्मा का विकास भी शिक्षण का अविभाज्य अंग होना चाहिए। उन्होंने बुनियादी शिक्षा पर प्रकाश डालते हुए इस बात पर बल दिया कि बुनियादी शिक्षा का उद्देश्य दस्तकारी के माध्यम से बालकों का शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास करना है। मैं मानता हूँ कि कोई भी पद्धति जो शैक्षणिक दृष्टि से सही हो और जो अच्छी तरह चलायी जाय, आर्थिक दृष्टि से भी उपयुक्त सिद्ध होगी।^{११} गाँधी परिकल्पित इस शिक्षण में लड़के-लड़कियाँ समान रूप से शामिल हैं। 16 वर्ष की उम्र तक उन्होंने दोनों की सहशिक्षा का समर्थन किया। कुछेक विषयों में लड़कियों को अलग से शिक्षा देना जरूर आवश्यक बताया। अहमदाबाद के गुजरात विद्यापीठ की स्थापना 1920 में उन्होंने की थी^{१२}

महात्मा गांधी की भारत को जो देन है उसमें बुनियादी शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बहुमूल्य है। इसे वर्धा योजना, नयी तालीम, बुनियादी तालीम तथा बेसिक शिक्षा के नामों से भी जाना जाता है। 22-23 अक्टूबर ए 1937 को वर्धा में जो अखिल भारतीय शैक्षिक सम्मेलन आयोजित हुआ उसकी अध्यक्षता गांधीजी ने की। उसके उद्घाटन भाषण में गांधीजी ने अपने शिक्षादर्शन के महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला। उसके बाद उनकी नई तालीम योजना के अनेक पहलुओं पर खुली चर्चा हुई। सम्मेलन के अन्तिम दिन निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किये गये-

- 1) बच्चों को 6 वर्ष तक राष्ट्रव्यापी निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दी जाय।
- 2) शिक्षा का मध्यम मातृभाषा हो।
- 3) इस दौरान दी जाने वाली शिक्षा हस्तशिल्प या उत्पादक कार्य पर केंद्रित हो। अन्य सभी योग्यताओं और गुणों का विकास जहाँ तक सम्भव हो बच्चों के पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए बालक द्वारा चुनी हुई हस्तकला से सम्बन्धित हो।

इन प्रस्तावों के पारित हो जाने के बाद डॉ जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में विशेषज्ञों की एक समिति का गठन किया गया जिसे इन प्रस्तावों के आधार पर व्यावहारिक पाठ्यक्रम तैयार करने का काम दिया गया। इन प्रस्तावों के आधार पर 1945 में एक राष्ट्रीय शैक्षिक योजना तैयार की गयी जो देश भर में 'नई तालीम' 'बुनियादी शिक्षा' या 'वर्धा योजना' के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसके चार भाग थे -

(1) पूर्व बुनियादी

(2) बुनियादी

(3) उच्च बुनियादी और

(4) वयस्क शिक्षा।

बुनियादी शिक्षा निरंतर प्रगति करती रही है क्योंकि बेसिक स्कूलों की संख्या बराबर बढ़ती रही है। किंतु साधारण प्रारंभिक और मिडिल स्कूलों की अपेक्षा बेसिक स्कूलों की संख्या की वृद्धि की गति में कमी रही है। बेसिक स्कूलों में प्रवेश का जहाँ तक संबंध है स्थिति संतोषजनक नहीं रही है। बुनियादी शिक्षा के वास्तविक मूल तत्व एवं निश्चित लक्ष्य के संबंध में बहुत ही गड़बड़ी दिखाई देती है। गांधी जी ने बुनियादी शिक्षा के सिद्धांतों को प्रतिपादित करते समय एक निश्चित सामाजिक व्यवस्था की कल्पना की थी। वह उत्पादक कार्य को शिक्षा का केंद्र मानते थे किंतु वास्तविक प्रयोग में उत्पादक कार्य द्वारा शिक्षा के सिद्धांत के भिन्न भिन्न अर्थ हो गए हैं। कुछ शिक्षाविदों जो गांधी जी के अनुयायी होने का दावा करते हैं विद्यालयों में प्रयोग योग्य वस्तुओं के वास्तविक महात्मा गांधी की भारत को जो देन है उसमें बुनियादी शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बहुमूल्य है। इसे वर्धा योजना नयी तालीम बुनियादी तालीम तथा बेसिक शिक्षा के नामों से भी जाना जाता है। उत्पादन पर जोर देते हैं। सभी प्रारंभिक विद्यालयों में बुनियादी शिक्षा के कुछ तत्व सरलतापूर्वक अपनाए जा सकते हैं। बेसिक स्कूल की शैक्षिक योजना को सुचारु रूप से चलाने के लिए यह आवश्यक है कि अध्यापकों की शैक्षिक पृष्ठभूमि उच्च कोटि की हो और वे अपने कार्य में प्रवीण हों। प्रारंभिक विद्यालयों के लिए अध्यापक तैयार करनेवाली सभी प्रशिक्षण संस्थाएँ बेसिक ढंग की होनी चाहिए।

3.3 अधिगम क्रियाकलाप

महात्मा गांधी की वर्धा योजना के कुछ कार्यकलापों को सूचीबद्ध कीजिये.

बोध प्रश्न

टिपण्णी

क) अपने उत्तर नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए.

[1] अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाईये.

1. गांधीजी ने अपने शिक्षादर्शन में किन महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 ज्योतिबा फुले का योगदान

जोतिराव गोविंदराव फुले ज्योतिबा फुले के नाम से प्रचलित 19वीं सदी के एक महान भारतीय विचारक, समाज सेवी, लेखक, दार्शनिक तथा क्रान्तिकारी कार्यकर्ता थे। महात्मा ज्योतिबा फुले का जन्म 1827 ई. में पुणे में हुआ था। ज्योतिबा फुले के पिता का नाम गोविन्द राव और माता का नाम चिमनबाई था। उनका परिवार कई पीढ़ी पहले सतारा से पुणे फूलों के गजरे आदि बनाने का काम करने लगा था। इसलिए माली के काम में लगे ये लोग फुले के नाम से जाने जाते थे। गोविन्द राव ने अपने पुत्र की जन्मजाति प्रतिभा को देखकर शिक्षार्जन हेतु भेजने का विचार किया। विद्यामन्दिरों में पंडित लोग तर्कशास्त्र, दर्शन-शास्त्र, व्याकरण आदि संस्कृति में ही पढ़ाते थे और किताबें इतिहास-भूगोल की जगह देवी-देवताओं की कहानियों से पटी पड़ी हुई थी। सन 1836 से ग्राम पाठशालाओं का सूत्रपात

हुआ ^८ ब्रिटिश सरकार के प्रारम्भ होने पर ही व्यवस्थित शिक्षा का सूत्रपात हुआ ^९ आगे समय बीतने के साथ-साथ ब्रिटिश सरकार ने शिक्षा का अधिकार सबको सुनिश्चित किया ^{१०} उस समय जो स्कूल थे उन पर सिर्फ सवर्ण समाज का ही अधिकार था यदि किसी अब्राहमण बालक ने काव्यपाठ किया या कुछ पढ़ा तो उसके साथ कठोर व्यवहार किया जाता था ^{११} ऐसी सामाजिक परिस्थितियों में गोविंदराव ने अपने पुत्र ज्योतिबा को शिक्षा देने का आसाधारण कार्य किया ^{१२} ज्योति बा ने बड़ी लगन और मनोयोग से एक मराठी पाठशाला में अपनी पढ़ाई शुरू की। ज्योतिबा जी पढ़ने में काफी होशियार थे उन्होंने जल्द ही मराठी का लिखना-पढ़ना और बोलना सीख लिया ^{१३} ^{१४} उन्हीं दिनों के बार ऐसा हुआ कि बम्बई नैटिव एजुकेशन सोसाइटी के संकेत पर सोसाइटी के विद्यालय से छोटी जाति के छात्रों को निकाल दिया गया ^{१५} गोविंदराव ने भी उसी समय अपने पुत्र ज्योतिबा को विद्यालय से निकाल लिया ^{१६} जातिवाद ^{१७} रूढ़िवादिता आदि संकुचित विचारधाराओं के चलते कट्टरपंथी हिन्दुओं के कारण ज्योति बा को पाठशाला छोड़नी पड़ी। ज्योति बा अपने परिवार के कार्य में पिता का हाथ बटाने लगे। इसी बीच सन् 1840 में ज्योति बा का विवाह सतारा जिले के नाय नामक गांव की सावित्री बाई से कर दिया गया। जो बाद में स्वयं एक मशहूर समाजसेवी बनीं। लम्बे प्रयासों के बाद लोगों ने गोविन्द राव को अपने कुषाग्र और प्रतिभाषाली बेटे को आगे पढ़ाने के लिए राजी कर लिया। तीन वर्ष के बाद ज्योति बा एक बार फिर स्कूल जाने लगे। लेकिन इस बार उन्होंने मराठी के बजाए मिशनरी स्कूल में प्रवेश लिया। स्कॉटलैंड के मिशन द्वारा संचालित स्कूल में ज्योतिबा जी ने अधिकतर शिक्षा ग्रहण की ^{१८} 21 वर्ष की उम्र में अंग्रेजी की सातवीं कक्षा की पढ़ाई पूरी की। ज्योतिबा और उनका ब्राह्मण मित्र सदाशिव बल्लाल गोबंदे मिलकर अंधविश्वासों तथा मिथ्या कुरीतियों में फंसे लोगों को उनसे मुक्त होने के लिए प्रेरित करते रहते थे ^{१९} ज्योतिबाफुले जी ने अपनी पुस्तक गुलामी (स्लेवरी) में स्पष्ट लिखा है कि वे अपने देश से अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकना चाहते थे ^{२०} ज्योतिबा जी के छात्र जीवन से ही अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध छुटपुट घटनाएँ होने लगी थी ^{२१}

पेशवा बाजीराव द्वितीय के शासन काल में उन दिनों किसानों-मजदूरों पर क्रूर अत्याचार किये जाते थे। हिन्दू धर्म की ऊंच-नीच और जात-पात की इन अमानवीय स्थितियों ने ज्योति बा के मन को विचलित कर दिया। उन्होंने संकल्प लिया कि वे महिलाओं ^{२२} पिछड़ों ^{२३} दलितों और अछूतों को समाज की मुख्य धारा में लाकर राजनैतिक ^{२४} शैक्षणिक ^{२५} सामाजिक और आर्थिक समानता पर आधारित एक शोषण रहित समाज बनायेंगे। अपने संकल्प को मूर्तरूप देने के लिए 21 वर्ष की आयु में ज्योतिबा फुले जी ने महाराष्ट्र को एक नये ढंग का नेतृत्व दिया ^{२६}

ज्योतिबाफुले जी ने महाराष्ट्र की नारी तथा शूद्रों दोनों को सामाजिक गुलामी से मुक्त कराने की प्रतिज्ञा की 1848 में ज्योति बा ने महिलाओं और अछूतों के लिए पूणा में एक विद्यालय खोला। देश में इस प्रकार का यह पहला विद्यालय था। च उस विद्यालय में सभी छोटी जातियों की छात्राएं शिक्षा पाने लगी च ज्योतिबा जी का विचार था कि अगर नारी शिक्षित नहीं होगी तो उसके बच्चे संस्कारी और परिष्कृत नहीं बन सकते च

महिला शिक्षक की कमी को पूरा करने के लिए ज्योति बा ने पहले स्वयं अपनी पत्नी सावित्री बाई को पढ़ाया। सावित्री बाई ने शिक्षित होने पर विद्यालय में पढ़ाना शुरू कर दिया। सावित्री बाई को देश की पहली महिला शिक्षक बनने का गौरव प्राप्त है। महिला और अछूतों की पढ़ाई को पाप समझने वाले सनातनी लोगों ने फुले दम्पत्ति को महिला और अछूतों को शिक्षा देने के काम से रोकने के अनेकों प्रयास किये। उन पर पत्थर, गोबर आदि फेंके और गाली दी। पर ज्योति बा के संकल्प के आगे यह सब बेकार गया। सनातनी लोगों ने अपने अंतिम प्रयास के रूप में ज्योति बा के पिता गोविन्द राव को डरा-धमका और समझा-बुझाकर उनके द्वारा ज्योति बा और सावित्री बाई को घर से निकलवा दिया। अनेकों कठिनाइयों के कारण फुले दम्पत्ति को अपना विद्यालय बन्द करना पड़ा। लेकिन अपने सुधारवादी ब्राह्मण मित्र सदाशिव बल्लाल गोविन्दे और मुंशी गफ्फार बेग की मदद से ज्योति बा ने अपना विद्यालय फिर से शुरू कर दिया। एक और ज्योति बा विद्यालयों की संख्या बढ़ाते रहे दूसरी ओर उन्होंने मजदूरों और किसानों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाते हुए उन्हें वे संगठित करने लगे। ज्योति बा ने उनको सहकारिता और ट्रस्टीशिप अपनाने के लिए प्रेरित किया।

दो वर्षों तक शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने के बाद ज्योतिबा जी ने 3 जुलाई 1953 को एक दूसरा विद्यालय पूना के अन्नासाहेब चिपलूणकर भवन में खोला च अपने इस विद्यालय के संचालन के लिए एक प्रबंध समिति का गठन किया च उस समय की सरकार को प्रबंध समिति की सूची प्रस्तुत की गयी च शासन ने ज्योतिबा फुले जी के शिक्षा सम्बन्धी कार्यों की प्रशंसा की और उन्हें एक महान समाज सेवी की रूप में मान्यता दी च प्रबंध समिति ने हमेशा यही आशा रखी कि ज्यो-ज्यो नारी शिक्षा की गति बढ़ेगी और उसका विकास होगा वैसे-वैसे देश का विकास होगा च ज्योतिबा फुले केवल पीड़ित-शोषितजनों के ही नहीं बल्कि समाज सुधारकों के भी रक्षक थे च ज्योतिबा फुले को उनके अदम्य साहस एवं सेवा भावना के फलस्वरूप उनको समाज सेवियों के बीच प्रथम स्थान मिला था च उस समय के कुछ समाज सेवी ब्राह्मणों ने ज्योतिबा की नीतियों से प्रभावित होकर उनका सहयोग करना प्रारम्भ कर दिया जिससे रूढ़िवादी और समाज सेवी ब्राह्मणों में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी च इसी क्रम में ज्योतिबा जी ने आगे कई विद्यालय खोले च

ज्योतिबा जी ने पूना में एक पुस्तकालय की स्थापना की जो छोटी जाति के छात्र-छात्रों के लिए अत्याधिक उपयोगी सिद्ध हुआ। इस कार्य के लिए पूना के अनेक महानुभावों ने हर प्रकार का सहयोग दिया। ज्योतिबा जी शिक्षक का कार्य जरूर करते थे किन्तु उनके अध्यापन की सीमा केवल विद्यालय तक सीमित नहीं रही। वे एक समग्र समाज के शिक्षक सिद्ध हुए। ज्योतिबा जी ने मनुस्मृति के आसामाजिक सिद्धान्तों का खंडन किया। ज्योतिबा जी ने मनुस्मृति की खुली आलोचना की। उन्होंने समाज के निम्न वर्गों को ललकार पूर्वक सम्बोधित किया और कहा 'मेरा अनुसरण करो' अब मत डगमगाओ। शिक्षा तुमको आनंद देगी। ज्योतिबा तुम से विश्वास पूर्वक कहता है। ज्योतिबाफुले जी ने समूची सामाजिक परम्पराओं का विरोध किया तो परम्परा प्रेमी ज्योतिबा को अपना शत्रु समझने लगे। ज्योतिबा जी ने सभी को चुनौती देते हुए शिक्षा के द्वार सभी के लिए खोल दिए। ज्योतिबा जी ने शूद्र और नारी उद्धार के लिए शिक्षा पर ही विशेष बल दिया। मुंबई सरकार के अभिलेखों में ज्योतिबा फुले द्वारा पुणे और उसके आसपास के क्षेत्रों में 18 शुद्रादी विद्यालय खोले जाने का उल्लेख मिलता है।

पंद्रह वर्ष के लगातार संघर्ष के पश्चात ज्योतिबा जी ने अनुभव किया कि उनके विचार-सिद्धान्तों एवं आदर्शों के लिए एक ऐसा मंच और संस्था की आवश्यकता है। जिसके माध्यम से छोटे वर्गों को समाज के समान धरातल पर लाने के लिए भरपूर प्रयास किया जाए। अभी तक वह पुस्तकों, पर्चों और भाषणों के द्वारा ही इस कार्य को सम्पादित कर रहे थे। अतः ज्योतिबा जी ने 24 सितम्बर 1873 में अपने सभी हितैषियों, प्रशंसकों तथा अनुयायियों की एक सभा बुलाई। उनसे विचार-विमर्श के बाद तथा ज्योतिबा जी के विचारों से सहमत होते हुए संस्था का गठन कर दिया गया। महात्मा ज्योतिबा फुले जी ने संस्था का नाम दिया 'सत्य शोधक समाज'। 28 नवम्बर 1890 ज्योतिबा फुले के संघर्षपूर्ण जीवन का अंत हुआ। महात्मा फुले के आंदोलन में सावित्री बाई का सबसे महत्वपूर्ण योगदान तब हुआ जब उन्होंने अपने पति के निधन के बाद सत्य शोधक समाज का 1891 से लेकर 1897 तक सफल नेतृत्व किया।

महात्मा फुले ने लोगों को शिक्षित और जागरूक बनाने के उद्देश्य से अनेकों ग्रन्थ लिखे:

- तृतीय रत्न (नेत्र) दृ 1855
- ब्राह्मणचे कसब दृ 1869
- शिवाजी जीवन वृत्तांत दृ 1869
- गुलामगिरी दृ 1873
- किसान का कोडा दृ 1883
- सत्यसार दृ 1885
- ईषारा (चेतावनी) दृ 1885

- अछूतों की कैफियत दृ 1885
- सार्वजनिक सत्य धर्म दृ 1889

3.4 अधिगम क्रियाकलाप

ज्योतिबा फुले द्वारा निर्मित संस्थाओं को सूचीबद्ध कीजिये.

बोध प्रश्न

टिपण्णी

क) अपने उत्तर नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए.

[1] अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाईये.

2. ज्योतिबा फुले ने प्रथम विद्यालय की नींव कब डाली ?

.....

.....

3. ज्योतिबा फुले द्वारा रचित किन्हीं तीन पुस्तकों के नाम बताइए.

.....

.....

.....

3०5 दादाभाई नौरोजी का योगदान

दादाभाई नौरोजी मुंबई के एक अग्रणी समाज सुधारक थे. पारसी धर्म के सुधारकों में उनका नाम सर्वोपरी है. दादाभाई नौरोजी का जन्म 4 सितम्बर 1825 को बम्बई के एक गरीब पारसी पुरोहित परिवार में हुआ था। दादाभाई नौरोजी जब केवल चार साल के थे तब उनके पिता नौरोजी पलांजी डोरडी का देहांत हो गया। उनकी माता मनेखवाई ने उन्हें कठोर आर्थिक परिस्थितियों का सामना करते हुए पढ़ने हेतु शाला भेजा, उन्होंने अनपढ़ होने के बावजूद भी यह तय किया कि दादाभाई नौरोजी को यथासंभव सबसे अच्छी अंग्रेजी शिक्षा मिले। एक छात्र के तौर पर दादा भाई नौरोजी गणित और अंग्रेजी में बहुत अच्छे थे। उन्होंने बहुत-सी पुस्तकों के साथ-साथ पारसी धर्मग्रन्थों का भी अध्ययन किया। उनके प्रिंसिपल महोदय ने उन्हें इंग्लैण्ड जाकर शिक्षा पूरी करने हेतु कुछ वित्तीय सहायता भी देनी चाहिए किन्तु दुर्भाग्य कि वे नहीं जा पाये।

उन्होंने बम्बई के एल्फिंस्टोन इंस्टिट्यूट से अपनी पढाई पूरी की और शिक्षा पूरी होने पर वहीं पर अध्यापक के तौर पर नियुक्त हो गए। दादा भाई नौरोजी एल्फिंस्टोन इंस्टिट्यूट में मात्र 27 साल की उम्र में गणित और भौतिक शास्त्र के प्राध्यापक बन गए। किसी विद्यालय में प्राध्यापक बनने वाले वो प्रथम भारतीय थे।। एल्फिंस्टोन कॉलेज में प्रोफेसर के पद पर सम्मानित होकर 6 वर्षों तक उन्होंने अपनी सेवाएं दीं। बाद में यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन में उन्होंने प्रोफेसर के रूप में अपनी सेवाएं दीं।

उन्होंने पारसी लॉ एसोसिएशन की स्थापना में योगदान दिया। दादाभाई नौरोजी ने ज्ञान प्रसारक मण्डली नामक एक महिला हाई स्कूल एवं 1852 में बम्बई एसोसिएशन की स्थापना की। लंदन में रहते हुए दादाभाई ने 1866 ई. में लंदन इण्डियन एसोसिएशन एवं ईस्ट इंडिया एसोसिएशन की स्थापना की। वे महात्मा गांधी के प्रेरणा स्रोत थे समाज सेवा हेतु उन्होंने कई कार्य किये जिनमें निःशुल्क पाठशालाओं आदि की व्यवस्था थी। उन्होंने शिक्षा के विकास सामाजिक उत्थान और परोपकार के लिए बहुत-सी संस्थाओं को प्रोत्साहित करने में योगदान दिया और वे प्रसिद्ध साप्ताहिक इरास्ट गोपतर के संपादक भी रहे। वे अन्य कई जर्नल से भी जुड़े रहे। वे सामाजिक कार्यों में भी रुचि लेते थे। उनका कहना था कि हम समाज की सहायता से आगे बढ़ते हैं इसीलिए हमें भी पूरे मन से समाज की सेवा करनी चाहिए।

3.5 अधिगम क्रियाकलाप

दादाभाई नौरोजी के कुछ कार्यकलापों को सूचीबद्ध कीजिये.

बोध प्रश्न

टिपण्णी

क) अपने उत्तर नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए.

[1] अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइये.

4th दादाभाई नौरोजी ने किन एसोसिएशन की स्थापना में योगदान दिया

.....

.....

.....

.....

.....

.....

गोपाल कृष्ण गोखले का जन्म 9 मई 1866 ई. को महाराष्ट्र में कोल्हापुर नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता कृष्णराव श्रीधर गोखले एक गरीब किंतु स्वाभिमानी ब्राह्मण थे। पिता के असामयिक निधन ने गोपाल कृष्ण को बचपन से ही सहिष्णु और कर्मठ बना दिया था। स्नातक की डिग्री प्राप्त कर गोखले गोविन्द रानाडे द्वारा स्थापित श्देक्कन एजुकेशन सोसायटी के सदस्य बने। बाद में ये महाराष्ट्र के सुकरात कहे जाने वाले गोविन्द रानाडे के शिष्य बन गये। शिक्षा पूरी करने पर गोपालकृष्ण कुछ दिन न्यू इंग्लिश हाई स्कूल में अध्यापक रहे। बाद में पूना के प्रसिद्ध फर्ग्यूसन कॉलेज में इतिहास और अर्थशास्त्र के प्राध्यापक बन गए। 1905 में गोखले ने भारत सेवक समाज, सरवेंट्स ऑफ़ इंडिया सोसाइटी की स्थापना की ताकि नौजवानों को सार्वजनिक जीवन के लिए प्रशिक्षित किया जा सके।

गोपाल कृष्ण गोखले ने सबसे पहले प्राथमिक शिक्षा सरकार की तरफ से मुहैया करवाने की बात कही थी। बाद में गांधी ने गोखले से मिले अनुभवों और अपनी समझ को शामिल करते हुए नई तालीम के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाने और आस-पास के परिवेश में जीने का कौशल विकसित करने में सक्षम शिक्षा देने की बात कही। ताकि सिद्धांत और व्यवहार का अंतर कम से कम हो सके। श्रम के महत्व को समाज में स्थापित किया जा सके। उनका मानना था कि वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा भारत की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इसीलिए इन्होंने सबसे पहले प्राथमिक शिक्षा लागू करने के लिये सदन में विधेयक भी प्रस्तुत किया था। इसके सदस्यों में कई प्रमुख व्यक्ति थे। उन्हें नाम मात्र के वेतन पर जीवन-भर देश सेवा का व्रत लेना होता था। शिक्षा को मौलिक अधिकार का दर्जा प्रदान करने की मांग की नींव गोखले ने ही विधानसभा में रखी थी। गोखले ने भारत के लिए काउंसिल ऑफ़ द सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट और इन्स्टीट्यूट की उपाधि में पद ग्रहण करने से इन्कार कर दिया था। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वे निम्न जाति के हिन्दुओं की शिक्षा और रोज़गार में सुधार की मांग कर रहे थे जिससे कि उन्हें आत्म-सम्मान और सामाजिक स्तर प्रदान किया जा सके। गोखले ने स्वदेशी का प्रचार करते हुए भारत में औद्योगिकीकरण का समर्थन किया किन्तु वे बायकाट की नीति के विरुद्ध थे। अपने समझौतावादी स्वभाव के वशीभूत होकर 1906 के कलकत्ता अधिवेशन में उन्होंने बायकाट के प्रस्ताव का समर्थन किया। गोपाल कृष्ण गोखले ने 18 मार्च 1910 में ही भारत में मुफ्त और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के प्रावधान के लिए ब्रिटिश विधान परिषद् के समक्ष प्रस्ताव रखा था जो निहित स्वार्थों के विरोध के चलते अंततः खारिज हो गया।

गोपाल कृष्ण गोखले मधुमेह दमा जैसी कई गंभीर बीमारियों से परेशान रहने लगे और अंततः 19 फरवरी 1915 ई. को मुम्बई महाराष्ट्र में उनका निधन हो गया। गोखले की मृत्यु

के बाद महात्मा गांधी ने अपने इस राजनीतिक गुरु के बारे में कहा "सर फिरोजशाह मुझे हिमालय की तरह दिखाई दिये जिसे मापा नहीं जा सकता और लोकमान्य तिलक महासागर की तरह जिसमें कोई आसानी से उतर नहीं सकता पर गोखले तो गंगा के समान थे जो सबको अपने पास बुलाती है।" तिलक ने गोखले को भारत का हीरा महाराष्ट्र का लाल और कार्यकर्ताओं का राजा कहकर उनकी सराहना की।

3.6 अधिगम क्रियाकलाप

गोपालकृष्ण गोखले जी शिक्षा के लिए किये गए प्रयासों को सूचीबद्ध कीजिये.

बोध प्रश्न

टिपपणी

क) अपने उत्तर नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए.

[1] अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाईये.

5⁰ गोखले जी ने प्राथमिक शिक्षा के लिए क्या प्रयास किये ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.7 सर्व शिक्षा अभियान

शिक्षा एक ऐसा साधन है जो राष्ट्र की सामाजिक दृष्टिकोण स्थिति में सुधार लाने में एक जीवंत भूमिका निभा सकता है। यह नागरिकों की विश्लेषण क्षमता सहित उनका सशक्तीकरण करता है, उनके आत्म विश्वास का स्तर बेहतर बनाता है और उन्हें शक्ति से परिपूर्ण करता है एवं दक्षता बढ़ाने के लक्ष्य तय करता है। शिक्षा में केवल पाठ्यपुस्तकें सीखना शामिल नहीं है बल्कि इसमें मूल्यों, कौशलों तथा क्षमताओं में भी वृद्धि की जाती है। इससे व्यक्ति को अपने कैरियर और साथ ही प्रगतिशील मूल्यों के साथ एक नए समाज के निर्माण में एक उपयोगी भूमिका निभाने में सहायता मिलती है। अतः शिक्षा व्यक्तिगत स्तर के साथ बेहतरी के लिए पूरे समाज में बदलाव ला सकती है। शिक्षा का क्षेत्र भारत सरकार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है, जिसके द्वारा प्रारंभिक शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए प्रावधानों तथा योजनाओं को नियमित रूप से तैयार किया जाता रहा है।

शिक्षा का अधिकार भारतीय संविधान द्वारा एक मूलभूत अधिकार घोषित किया गया है। इसमें बताया गया है कि ६ राज्य द्वारा 6 से 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों को निरुशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा इस प्रकार प्रदान की जाएगी कि इसे कानून द्वारा निर्धारित किया जाए।^{१६}

सर्व शिक्षा अभियान को सभी के लिए शिक्षा अभियान के नाम से ही जाना जाता है अथवा “प्रत्येक व्यक्ति एक को पढ़ाएँ” भी कहा जाता है। यह भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे एक अनुकरणीय कार्यक्रम के रूप में 2000-01 में आरंभ की गई थी। यह योजना वर्ष 2010 तक 6 से 14 वर्ष के आयु समूह में सभी बच्चों को उपयोगी तथा सार्थक प्रारंभिक शिक्षा प्रदान करने के लिए बनाई गई है।

सर्व शिक्षा अभियान का लक्ष्य

सर्व शिक्षा अभियान का लक्ष्य विद्यालयों के प्रबंधन में समुदाय की सक्रिय भागीदारी के साथ सामाजिक, क्षेत्रीय और लिंग संबंधी अंतरालों को पाटना है। आईसीडीएस केन्द्रों या गैर आईसीडीएस क्षेत्रों में विशेष शाला पूर्व केन्द्रों में शाला पूर्व सीखने के प्रयासों को समर्थन देने के सभी संभव प्रयास महिला और बाल विकास मंत्रालय के प्रयासों को पूरकता प्रदान करने हेतु किए जाते हैं।

सर्व शिक्षा अभियान के उद्देश्य

सर्व शिक्षा अभियान समुदाय द्वारा एक मिशन के रूप में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के प्रावधान के माध्यम से सभी बच्चों में मानवीय क्षमताओं के उन्नयन के लिए अवसर प्रदान करने का एक प्रयास है। सर्व शिक्षा अभियान को निम्नलिखित विशिष्ट लक्ष्यों के साथ तय किया गया है:

- विद्यालय, शिक्षा गारंटी केंद्रों, वैकल्पिक विद्यालयों या ‘विद्यालयों में वापस’ अभियान द्वारा वर्ष 2003 तक सभी बच्चों को लाना।
- वर्ष 2007 तक 5 वर्ष की आयु वाले सभी बच्चे प्राथमिक शिक्षा पूरी करें।
- वर्ष 2010 तक 8 वर्ष की आयु वाले सभी बच्चे प्रारंभिक शिक्षा पूरी करें।
- जीवन के लिए शिक्षा पर बल देते हुए संतोषजनक गुणवत्ता की प्रारंभिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित
- वर्ष 2007 तक प्राथमिक चरण और 2010 तक प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर आने वाले सभी लिंग संबंधी और सामाजिक श्रेणी के अंतराल पाट दिए जाएं।
- वर्ष 2010 तक सार्वत्रिक प्रतिधारण

इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ऐसी कार्यनीतियां बनाई गई हैं जिनमें ब्लॉक स्तर के संसाधन केन्द्रों की स्थापना हेतु स्थानीय समुदाय समूहों एवं संस्थागत क्षमता निर्माण को सक्रिय रूप से शामिल करना है।

सर्व शिक्षा अभियान की रूपरेखा में शिक्षकों की नियुक्ति, उनका प्रशिक्षण, माता पिता तथा छात्रों को प्रेरित करना, प्रोत्साहनों जैसे कि छात्रवृत्ति, वर्दी, पाठ्यपुस्तकें आदि जैसे प्रोत्साहनों का प्रावधान शामिल है। यह कार्यक्रम उन क्षेत्रों में नए विद्यालय खोलने पर भी लक्षित है जहां विद्यालयीन सुविधाएं कम हैं और अतिरिक्त कक्षाकक्षों, शौचालय, पेय जल सुविधाओं आदि के प्रावधान निर्मित करने के माध्यम से मौजूदा विद्यालयीन मूल संरचना को सुदृढ़ बनाने पर भी लक्षित है।

सर्व शिक्षा अभियान में निजी क्षेत्र की भूमिका

जबकि सर्व शिक्षा अभियान को सरकार तथा सरकारी प्राप्त स्कूलों के माध्यम से प्रशासित किया जा रहा है, कुछ निजी गैर सहायता प्राप्त स्कूल भी सार्वत्रिक प्रारंभिक शिक्षा के प्रति योगदान में सक्रिय रूप से शामिल हैं। हाल ही में सरकार ने सर्व शिक्षा अभियान के दूसरे चरण के निधिकरण के लिए 600 मिलियन अमेरिकी डॉलर (बाहरी वेबसाइट जो एक नई विंडो में खुलती है) की सहायता के लिए विश्व बैंक के साथ समझौता किया है।

सर्व शिक्षा अभियान भारत सरकार द्वारा प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण में एक महत्वपूर्ण प्रयास है जो नागरिकों को प्रारंभिक शिक्षा का महत्व समझने में प्रयासरत है। सामाजिक न्याय और समानता सभी को मूलभूत शिक्षा प्रदान करने के लिए एक सशक्त तर्क हैं। मूलभूत शिक्षा के प्रावधान से जीवन स्तर में सुधार भी आती है, विशेष रूप से जीवन अपेक्षा, शिशु मृत्यु दर और बच्चों की पौषणिक स्थिति।

3. 7 अधिगम क्रियाकलाप

अपने नजदीक के विद्यालय में सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत शिक्षा के लिए किये गए प्रयासों को सूचीबद्ध कीजिये.

बोध प्रश्न

टिपण्णी

क) अपने उत्तर नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए.

[1] अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाईये.

6^ए सर्व शिक्षा अभियान के कोई तीन उद्देश्य लिखिए.

.....

.....

.....

.....

.....

3.8 राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान

राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (रा.मा.शि.अ.) परियोजना कोश, एनसीईआरटी में अप्रैल 26, 2012 में स्थापित किया गया। माध्यमिक स्तर के स्कूल-अध्ययन कक्ष स्तर पर गुणवत्ता और क्षमता सुधार करना आरएमएसए का मुख्य कार्यक्षेत्र है। उनके अधिकतम उपयोग के बिना संसाधनों-अवसर-रचना के प्रबंधन को विपरीत रूप से प्रभावित करने के साथ ही बिना शिक्षण स्तर के सुधार के केवल शिक्षा की पहुँच बनाने से लाभ नहीं होता है। अतः आवश्यकता है कि पहुँच और इक्वेटी की वृद्धि के निदेश के प्रभाव सहित गुणवत्ता की प्राप्ति का प्रयास साथ-साथ चले। इसके अलावा, यह अक्सर महसूस किया जाता है कि पाठ्यक्रम सुधार और शैक्षणिक सुधार के लिए दखल-धुन्नति की योजना बनाना, मूल्यांकन और कार्यान्वयन का कार्य एक कठिन कार्य है। अतः सम्पूर्ण गतिविधियों में निगरानी का मुख्य स्थान है, जिसका उद्देश्य माध्यमिक शिक्षा के स्तर में सुधार करना है। सभी गुणवत्ता प्रयासों का मुख्यलक्ष्य स्कूल-अध्ययन कक्ष व्यवस्था के भीतर

अनुकूल बदलाव लाना है। अतः गुणवत्तायुक्त शिक्षा की प्राप्ति के लिए इनपुट और प्रक्रिया की गुणवत्ता सुनिश्चित करना आवश्यक है।

6000 मॉडल स्कूल, मौजूदा उच्च प्राथमिक स्कूलों का माध्यमिक स्कूलों में उन्नयन, मौजूदा माध्यमिक स्कूलों का सबलीकरण, शिक्षकों की गुणवत्ता, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों का उन्नयन, विकलांग बच्चों के लिए समावेशित शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, आदि। निम्नलिखित सभी पहलुओं के साथ माध्यमिक शिक्षा स्तर पर पाठ्यचर्या संबंधी मुद्दों को संबोधित करना।

भूमिकाएं

माध्यमिक स्तर पर पाठ्यचर्या, शिक्षा शास्त्र, आकलन तथा शिक्षक-शिक्षा से संबंधित नीतियों को विकसित करना तथा इनमें सुधार लाने हेतु सलाह देना।

माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए रा.मा.शि.अ. के प्रभावी क्रियान्वयन में सहायता करना।

कार्य

- गुणवत्ता और समता को एक साथ लेकर चलते हुए, देश में रा.मा.शि.अ. के कार्यान्वयन का समर्थन करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न घटकों तथा अन्य शैक्षिक संस्थानों के सहयोग से माध्यमिक स्तर पर विभिन्न पहलुओं— पाठ्यक्रम विकास और प्रसार, सीखने की उपलब्धि का सर्वेक्षण, शिक्षकों का व्यावसायिक विकास, किशोरावस्था शिक्षा, मार्गदर्शन और परामर्श, व्यावसायिक शिक्षा, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग, इत्यादि का समन्वयन करना।
- एन.सी.ई.आर.टी. के सभी इकाइयों तथा अन्य शैक्षिक संस्थानों के सहयोग से सभी राज्यों/क्षेत्रों शासित क्षेत्रों को पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तकों तथा मूल्यांकन के तरीकों की समीक्षा करने और इनमें सुधार लाने के लिए अकादमिक सहायता प्रदान करना। यह समीक्षा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में दिए गए राष्ट्रीय, सामाजिक तथा शिक्षा शास्त्रीय सरोकारों, जैसे समावेशित शिक्षा, शांति, पर्यावरण, इत्यादि के परिपेक्ष्य में हो।
- गुणवत्ता के मुद्दों और रा.मा.शि. अभियान के तहत माध्यमिक शिक्षा से संबंधित चिंताओं पर विभिन्न हितधारकों के साथ बातचीत की शुरुआत करना तथा बढ़ावा देना।
- माध्यमिक स्तर पर सेवारत अध्यापक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों का सुदृढीकरण।
- सभी पाठ्यचर्या क्षेत्रों में गुणवत्ता सुधार के लिए आईसीटी सक्षम माध्यमिक शिक्षा को बढ़ावा देना तथा उसका सुदृढीकरण करना।
- पाठ्यक्रम में सुधार, सतत और व्यापक मूल्यांकन, परीक्षा में सुधार, आदि के रूप में गुणवत्ता के पहलुओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए शिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षकों सहित विभिन्न हितधारकों का क्षमता निर्माण करना।
- माध्यमिक स्तर पर विज्ञान, गणित और भाषा की शिक्षा का सुदृढीकरण।
- माध्यमिक स्तर पर अन्य पाठ्यचर्या क्षेत्रों जैसे कला और सौंदर्य, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा तथा काम और शिक्षा का बढ़ावा देना।
- माध्यमिक शिक्षा में गुणवत्ता के पहलुओं पर शोध अध्ययनों को बढ़ावा देना।
- विभिन्न स्तरों पर विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं, एन सी ई आर टी के अन्दर एनआईई विभागों— क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों, पंडित सुन्दरलाल शर्मा व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान सीआईईटी, स्कूल शिक्षा बोर्ड, माध्यमिक शिक्षक-शिक्षा संस्थानों, शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय आइ ए एस ई आदि के बीच समन्वयन और सहयोग को बढ़ावा देना तथा इनकी प्रभावी कार्य प्रणाली के लिए पृष्ठपोषण की व्यवस्था विकसित करना।

3. 8 अधिगम क्रियाकलाप

अपने नजदीक के विद्यालय में **राष्ट्रीय माध्यमिक** अभियान के अंतर्गत शिक्षा के लिए किये गए प्रयासों को सूचीबद्ध कीजिये.

बोध प्रश्न

टिपण्णी

क) अपने उत्तर नीचे दिए गए स्थान पर लिखिए.

[i] अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाईये.

7th राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के मुख्य कार्य बताइए

.....

.....

.....

.....

3.9 सारांश

प्राचीन काल से वर्तमान समय तक शिक्षा प्रणाली में बहुत बदलाव आये हैं. वैदिक काल से अंग्रेजी शासन तक शिक्षा का स्वरूप बदलता रहा है. स्वतंत्रता आन्दोलन के समय से ही भारतीय महापुरुषों ने देश की प्रगति के लिए शिक्षा के महत्त्व को स्वीकारा व भारतीय समाज व परिस्थितियों के हिसाब से आम जनता के लिए शिक्षा प्रणाली की रूपरेखा तैयार की. इसमें समय समय पर जरूरी बदलाव होते रहे हैं. सर्वप्रथम गोपाल कृष्ण गोखले ने प्राथमिक शिक्षा के लिए पहल की. व देश में प्राथमिक शिक्षा को निरुशुल्क और अनिवार्य करने का प्रयास किया। महात्मा गांधी की भारत को जो देन है उसमें बुनियादी शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बहुमूल्य है। इसे वर्धा योजना, नयी तालीम, श्बुनियादी तालीम तथा श्बेसिक शिक्षा के नामों से भी जाना जाता है। गांधीजी ने १९३७ में श्नयी तालीम की योजना बनायी .गांधीजी की बुनियादी शिक्षा का उद्देश्य जीविकोपार्जन, चारित्रिक विकास, सांस्कृतिक विकास, व्यक्ति और समाज का विकास, सामाजिक पुनर्निर्माण, सदाचार और नैतिकता, राष्ट्रीय एकता, आत्मानुभूति एवं ईश्वर प्राप्ति तथा व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास है। उस समय महाराष्ट्र में जाति-प्रथा बड़े ही वीभत्स रूप में फैली हुई थी। स्त्रियों की शिक्षा को लेकर लोग उदासीन थे, ऐसे में

ज्योतिबा फुले ने समाज को इन कुरीतियों से मुक्त करने के लिए बड़े पैमाने पर आंदोलन चलाए। उन्होंने महाराष्ट्र में सर्वप्रथम महिला शिक्षा तथा अछूतोंद्वारा का काम आरंभ किया था। उन्होंने पुणे में लड़कियों के लिए भारत की पहला विद्यालय खोला। इन सभी के सार्थक प्रयासों से शिक्षा में बदलाव हुए व देश में नयी वैज्ञानिक शिक्षा का उत्तरोत्तर विकास हुआ। सरकार के द्वारा भी इसको बेहतर बनाने के लिए कई सारी योजनाएँ लागू की गयीं। इनमें सर्व शिक्षा अभियान व राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान महत्वपूर्ण हैं। इनका विद्यालयों में विद्यार्थियों के नामांकन व शिक्षा स्तर पर व्यापक प्रभाव हुआ है।

3.10 प्रगति की जांच

1- महात्मा गांधी की भारत को जो देन है उसमें बुनियादी शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बहुमूल्य है।

१) बच्चों को ७ वर्ष तक राष्ट्रव्यापी, निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दी जाय।

(२) शिक्षा का मध्यम मातृभाषा हो।

(३) इस दौरान दी जाने वाली शिक्षा हस्तशिल्प या उत्पादक कार्य पर केंद्रित हो। अन्य सभी योग्यताओं और गुणों का विकास, जहाँ तक सम्भव हो, बच्चों के पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए बालक द्वारा चुनी हुई हस्तकला से सम्बन्धित हो।

2- 1848 में

3- ज्योतिबा फुले द्वारा रचित तीन पुस्तकों

गुलामगिरी

ईषारा (चेतावनी)

अछूतों की कैफियत

4- दादाभाई नौरोजी ने पारसी लॉ एसोसिएशन की स्थापना में योगदान दिया। उन्होंने ज्ञान प्रसारक मण्डली नामक एक महिला हाई स्कूल एवं 1852 में शम्भूई एसोसिएशन की स्थापना की। लन्दन में रहते हुए दादाभाई ने 1866 ई. में लन्दन इण्डियन एसोसिएशन एवं ईस्ट इंडिया एसोसिएशन की स्थापना की।

5- गोपाल कृष्ण गोखले ने सबसे पहले "प्राथमिक शिक्षा सरकार की तरफ से" मुहैया करवाने की बात कही थी। उन्होंने सबसे पहले प्राथमिक शिक्षा लागू करने के लिये सदन में विधेयक भी प्रस्तुत किया था। शिक्षा को मौलिक अधिकार का दर्जा प्रदान करने की मांग की नींव गोखले ने ही विधानसभा में रखी थी।

6- विद्यालय, शिगा •रंटी केंद्रों, वैकल्पिक विद्यालयों या 'विद्यालयों में वापस' अभियान द्वारा वर्ष 2003 तक सभी बच्चों को लाना।

वर्ष 2007 तक 5 वर्ष की आयु वाले सभी बच्चे प्राथमिक शिक्षा पूरी करें।

वर्ष 2010 तक 8 वर्ष की आयु वाले सभी बच्चे प्रारंभिक शिक्षा पूरी करें।

7- ावत्ता और समता को ढक साथ लेकर चलते हुु, देश में रा-मा-शि-अ- के कार्यान्वयन का समर्थन करने के लि, न-सी-ई-आर-टी- के विभिन्न णटकों तथा अन्य शैक्षिक संस्थानों के सहयो• से माध्यमिक स्तर पर विभिन्न पहलूओं- पाठयक्रम विकास और प्रसार, सीखने की उपलब्धि का सर्वेक्षा, शिक्षकों का व्यावसायिक विकास, किशोरावस्था शिक्षा, मार्गदर्शन और परामर्श, व्यावसायिक शिक्षा, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग, इत्यादि का समन्वयन करना। पाठयक्रम में सुधार, सतत और व्यापक मूल्यांकन, परीक्षा में सुधार, आदि के रूप में ावत्ता के पहलुओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लि, शिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षकों सहित विभिन्न हितधारकों का णमता निर्माण करना।

3.11 सन्दर्भ सूचि

शर्मा, लीलाधर भारतीय चरित कोश (हिन्दी)। भारतडिस्कवरी पुस्तकालयशिक्षा भारती ; दिल्ली,

पृष्ठ 246-247।

http://archive.india.gov.in/hindi/spotlight/spotlight_archive.php?id=32

http://mhrd.gov.in/hi/rmsa_integrated-hindi